ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 338-342

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

सामाजिक परिवर्तन और मीडियाः एक समाजशास्त्रीय उपागम

डॉ0 चंद्रिका प्रसाद Email : aaryvrat2013@gmail.com

Received- 28.11.2020, Revised- 01.12.2020, Accepted - 04.12.2020

सारांश– ***मीडिया ने भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। यह आधारभूत स्तर पर लोगों के रहन सहन, खानपान, रीति रिवाज, प्रगति, अंतः क्रिया, सामाजिक संस्थाओं इत्यादि में अपनी पैठ जमाया है। बोलचाल से लेकर बड़े बड़े आयोजनों तक मीडिया ने अपना असर दिखाया है। सामाजिक परिवर्तन के लिए जिम्मेदार सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथ्यों में मीडिया भी एक प्रभावी तथ्य है। मीडिया की भूमिका भारतीय समाज में छैतिज एवम उर्ध्वधार क्षेत्र दोनों तरह के परिवर्तन के लिए के लिए रहा है। मीडिया ने एक तरफ लोगों के व्यवहारिक मानसिक, बुद्धिमता को प्रभावित तो किया ही हैं,साथ ही सामाजिक संस्थाओं तथा परंपराओं को भी मौलिक रूप से परिवर्तित किया है। अस्तु, सामाजिक संरचना में परिवर्तन स्पष्ट देखा जा सकता है।)***

कुंजीभूत शब्द– शिक्षा ज्ञान, उचित आचरण, तकनीकी दक्षता, विद्या ।

एसोसिएट प्रोफेसर (सेवानिवृत्त)–समाजशास्त्र विभाग एम. एम. कॉलेज, बिक्रम –पाटलिपुत्र यूनिवर्सिटी, पटना (बिहार), भारत

अनुरूपी लेखक

मीडिया लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ है अगर लोकतन्त्र के तीन स्तम्भ उचित तरीके से अपने अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन नही कर पाते तो मीडिया के द्वारा ही उनके उत्तरदायित्व का बोध कराकर लोकतन्त्र को मजबूत किया जाता है। मीडिया एक ऐसा मंच है जहाँ पर साधारण जनता भी अपनी बातो को रखा सकता है। मीडिया का कार्य सरकार की कमीयों को उजागर करना है। और सामाजिक मुद्दों पर सरकार पर दबाव बनाना जिससे सामाजिक परिवर्तन की ओर एक सार्थक पहल हो सके। जब भी मीडिया की बात की जाती है, तो उसे समाज में जागरूकता पैदा करने वाले साधन के रूप में देखा जाता है। जो लोगों की सही व गलत करने की दिशा में प्रेरक का कार्य करता नजर आता है। जहां कही भी अन्याय है, शोषण है, अत्याचार, भ्रष्टाचार और छलना है। उन्हे जनहीत में उजागर करना पत्रकारिता का उद्देश्य है। मीडिया ही लोगों तक सामाजिक घटनाओं एवं समस्याओं की सत्यता को पहुँचाती है मीडिया के द्वारा सामाजिक मुद्दों के प्रति जनता का राय लिया जाता है मीडिया के प्रभाव के कारण ही समाज में राजनैतिक सामाजिक इत्यादि परिवर्तन हो रहे है। यहाँ यह कहा जा सकता है कि मीडिया मानव चेतना के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। मीडिया के प्रभाव के कारण समाज के विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तन का अध्ययन प्रस्तुत शोध पत्र में किया जायेगा।

मीडिया सदैव समाज का एक महत्वपूर्ण स्तंभ रहा है। मीडिया न केवल घटनायों की खबर ही देता है, बल्कि जनता की राय का निर्माण भी करता है। यह बात मीडिया को एक शक्तिशाली सत्ता देती है और जहाँ भी शक्ति होती है वहाँ सत्ता का दुरुपयोग होने की भी संभावना है। कुछ देशों में, जहाँ शक्तिशाली मीडिया समूह हैं, कहा जाता है कि उन देशों में घटनायों और लोगों को निश्चित तरीके से चित्रित करके चुनाव परिणामों को प्रभावित किया जाता है। भारत में भी, कुछ समय पूर्व संचार जगत के प्रमुख लोगों और नेताओं के बीच संबंध प्रकाश में आए।

सोशल मीडिया (एस एम) के उद्भव से मीडिया का दायरा बढ़ गया है। सोशल मीडिया ँड) के आ जाने से लोगों की आँखें व कान सब जगह पहुंच गये हैं। वे कुछ टेलीविजन (टीवी) चौनलों के कैमरा कर्मचारियों तक ही सीमित नहीं हैं। एस एम एक ऐसा मंच है जो जनता की राय को आसानी से बिना छेड़छाड़ कर सीधा जनता को दिखाता है। यह समाज की नब्ज को दिखाता है। यहाँ तक कि पारंपरिक मीडिया भी एस एम रुझानों पर लगातार नजर रखते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में हमने देखा कि बहुत सी महत्वपूर्ण खबरें एस एम से सामने आई। यह खबरें सामाजिक रूप से प्रासंगिक होने के साथ साथ अतिमहत्वपूर्ण भी थी, जिन पर सामाजिक मीडिया ने प्रकाश डाला , एस एम ने सरकार व जनता के बीच दूरी होने को भी साफतौर पर दर्शाया। जनता अब अधिक जागरूक हो गयी है और जानती है कि नेता कैसे कानूनों और नीतियों को, जो कि उनकी भलाई के लिए बनाए गये हैं, उनसे छेड़छाड़ करते हैं, इसके लिए जनता आपस में मुद्दों की चर्चा करती है। अब वह दिन चले गये जब सरकार बंद दरवाजों के पीछे कघनून पास करती थी और देश की जनता को इनका महीनों बाद पता चलता था। इसके लिए एस एम को धन्यवाद देना

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

होगा कि राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा और उनको पारित करने की घोषणा व्यापक रूप से और तत्काल हो जाती है।

कुछ राजनेता अपने मतदान बैंक को सुरक्षित रखने के लिए व अपने स्वार्थ व हित के लिए समुदायों को विभाजित रखते हैं। परंतु अब एस एम के कारण यह सीमायें समाप्त हो गई हैं और जनता अधिक जागरूक और बेहतर सूचित हो गई है, अब जनता को अंधेरे में रखना आसान नहीं है। अब किसी को भी भाषण व बयान देने से पहले अधिक जागरूक व सतर्क होने की जरूरत है। लोग किसी भी नौटंकी के पीछे एक गुप्त उद्देश्य और संकीर्ण मानसिकता के संकेतों का पता लगा लेते हैं और इसकी तीव्र आलोचना करते हैं।

सभी शक्तिशाली उपकरणों की तरह, एस एम को भी अत्यंत सावधानी और जिम्मेदारी से प्रयोग करना होगा, जिससे समाज को नुकसान न पहुचें। २०११ के लंदन दंगों में, आगजनी करने वालों ने अपने हमलों और रणनीतियों को निष्पादित करने के लिए एस एम का भरपूर प्रयोग किया। भारत में भी, एस एम ने बैंगलोर और हैदराबाद में रहने वाले उत्तर पूर्वी राज्यों से आए लोगों के बीच बड़े पैमाने पर आतंक का प्रसार किया और उनको पलायन पर मजबूर किया।

फिर भी लोगों को एक साथ जोड़ने की अपनी क्षमता के साथ साथ एस एम की सामाजिक बदलाव के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में अपार संभावनाएं हैं। हमनें हाल ही में कई संगठित विरोधों को सही रूप से व प्रभावशाली ढंग से एस एम द्वारा सफलतापूर्वक क्रियान्वित होते हुए देखा है, जिसका समाज पर सही प्रभाव पड़ा है। सामाजिक मीडिया का अन्य उपयोग इस विशाल विविधतापूर्ण मानव संसाधन शक्ति का प्रभावी ढंग से उपयोग करना भी है, जो सही मायनों में भारत में अब भी प्रयोग नही की गई है। उदाहरण के लिए, बेहतर भारत कार्यक्रम के एक स्वयंसेवी ने अपने इलाकेे में चिकित्सा शिविर लगाने की घोषणा की और उस तारीख पर और लोगों ने भी उस कार्यक्रम में भाग लिया। इसी प्रकार, किसी ने पेड़ लगाने या वृक्षारोपण की घोषणा की और किसी ने सफाई अभियान की, और बहुत से लोगों ने उस प्रयास की सराहना करते हुए, इसमें भाग लिया अपना समय दिया व संसाधनों का प्रयोग करके इन अभियानों को सफल बनाया। हम स्पष्ट रूप से परिवर्तन के दौर से गुजर रहे हैं। भारत युवाओं का देश है और परिवर्तन के लिए इन की एक बड़ी भूमिका है। एस एम एक माध्यम है सबको जोड़ने का और इनको आवाज देने का। यह आवाज जोरों से ऊँची हो रही है। यह एक स्वागत योग्य संकेत है मीडिया का दो तरह से विश्लेषण किया जाता है, एक सूचनात्मक पहलू के रूप में और दूसरा मनोरंजन के रूप में। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर आमतौर पर मीडिया में सवाल उठाया जाता है कि मीडिया को 'मुक्त' कैसे किया जाये? क्या मीडिया हमेशा नियंत्रित नहीं होता है? अक्सर यह धारणा है कि मीडिया एक शक्तिशाली उपकरण है, जिस को समाज में होने वाले सभी गलत कार्यों के लिए दोषी ठहराया जाता है। हम जो कुछ कागजों में पढ़ते हैं और टेलीविजन पर देखते हैं वह आमतौर पर हम मानते हैं।

यह अध्ययन इकाई मीडिया के कार्यों और समाज में इसकी भूमिका क्या होनी चाहिए इस पर केंद्रित है।

मीडिया के कार्य– मीडिया के मुख्य कार्य हैं दृ वास्तविकता के मुद्दों पर समाज को शिक्षित और सूचित करना और मनोरंजन करना। यह मीडिया को समाज के व्यक्तियों के लिए सांस्कृतिक विकास में योगदान देता है।

समाज और दुनिया में होने वाले घटनाओं और स्थितियों के बारे में जानकारी प्रदान करना।

सत्ताधारी और जनता के संबंधों को इंगित करना।

नवाचार, अनुकूलन और प्रगति को सुगम बनाना।

घटनाओं और सूचनाओं के अर्थ पर व्याख्या और टिप्पणी करना।

अलग–अलग गतिविधियों का समन्वय करना।

सर्वसम्मति निर्माण में योगदान करना।

सामाजिक तनाव को कम करना।

युद्ध, राजनीति और आर्थिक विकास जैसे मुद्दों में सामाजिक निष्पक्षता प्रदान करना, आदि।

राजनीतिक घटनाक्रम की जानकारी देना।

राजनीतिक निर्णयों के बारे में जनता की राय का मार्गदर्शन करना।

राजनीतिक विकास और निर्णयों के बारे में अलग–अलग विचार व्यक्त करना।

राजनीतिक घटनाक्रम और फैसलों का विश्लेषण करना।

इस प्रकार, मीडिया प्रमुख सामाजिककरण और वैचारिक उपकरणों के रूप में समाज के महत्वपूर्ण कार्यों की समीक्षा के लिए एक संरचित ढांचा प्रदान करते हैं।

मीडिया के बहुआयमी कार्य निम्न प्रकार के हैं –

1. जानकारी – सूचना भेजना और साझा करना मीडिया का प्रमुख कार्य है। चूंकि जानकारी ज्ञान है और ज्ञान शक्ति है, इसलिए मीडिया एक प्रामाणिक दर्शकों के लिए विभिन्न घटनाओं और स्थितियों के बारे में प्रामाणिक वस्तुओं के रूप में प्रामाणिक और समय पर तथ्यों और विचारों की पेशकश करता है। जनसंचार माध्यमों द्वारा दी गई सूचनाओं पर विचार किया जा सकता है, उद्देश्य, व्यक्तिपरक, प्राथमिक और माध्यमिक। मीडिया के

PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

जानकारीपूर्ण कार्य भी दर्शकों को उनके आसपास होने वाली घटनाओं के बारे में बताते हैं और सच्चाई पर आते हैं। मीडिया ज्यादातर सूचनाओं को रेडियो, टीवी, साथ ही समाचार पत्र या पत्रिकाओं के स्तंभों पर प्रसारित समाचार के माध्यम से प्रसारित करता है।

शिक्षा– मीडिया शिक्षा और जानकारी प्रदान करता है। यह सभी स्तरों के लोगों को विभिन्न विषयों में शिक्षा प्रदान करता है। वे विभिन्न प्रकार की सामग्री का उपयोग करके प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से लोगों को शिक्षित करने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए, एक दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम एक प्रत्यक्ष दृष्टिकोण है। नाटक, वृत्तचित्र, साक्षात्कार, फीचर कहानियां और कई अन्य कार्यक्रम लोगों को अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षित करने के लिए तैयार किए जाते हैं। विशेष रूप से विकासशील देश में, मास मीडिया का उपयोग जन जागरूकता के लिए प्रभावी उपकरण के रूप में किया जाता है।

मनोरंजन– मीडिया का अन्य महत्वपूर्ण कार्य मनोरंजन है। इसे मीडिया के सबसे स्पष्ट और अक्सर उपयोग किए जाने वाले फंक्शन के रूप में भी देखा जाता है। दरअसल, मनोरंजन एक तरह का प्रदर्शन है जो लोगों को आनंद प्रदान करता है। मीडिया लोगों को मनोरंजन प्रदान करके इस कार्य को पूरा करता है। समाचार पत्र और पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन और ऑनलाइन माध्यम अपने दर्शकों का मनोरंजन करने के लिए कहानियों, फिल्मों, धारावाहिकों और कॉमिक्स की पेशकश करते हैं। खेल, समाचार, फिल्म समीक्षा, कला और फैशन अन्य उदाहरण हैं। यह दर्शकों के मनोरंजन और आराम के समय को अधिक मनोरंजक और मजेदार बनाता है।

प्रोत्साहन– यह मास मीडिया का एक और कार्य है। अनुनय में दूसरों के दिमाग पर प्रभाव बनाना शामिल है। मास मीडिया दर्शकों को विभिन्न प्रकार से प्रभावित करता है। मीडिया कंटेंट राय बनाता है और जनता के दिमाग में एजेंडा सेट करता है। यह वोटों को प्रभावित करता है, व्यवहार को बदलता है और व्यवहार को नियंत्रित करता है। संपादकीय, लेखों, टिप्पणियों और दूसरों के बीच का उपयोग करते हुए, मास मीडिया दर्शकों को राजी करता है। हालांकि, सभी दर्शकों को इसके बारे में अच्छी तरह से पता नहीं है। उनमें से कई अनजाने में इसके प्रति प्रभावित या प्रेरित हो जाते हैं। विज्ञापन एक उदाहरण है जिसे मनाने के लिए डिजाइन किया गया है।

निगरानी– निगरानी अवलोकन निरूपित करता है। यहां अवलोकन का मतलब है समाज को करीब से देखना। जनसंचार माध्यमों का कार्य समाज को बारीकी से और निरंतर निरीक्षण करना है और संभावित नुकसान को कम करने के लिए भविष्य में होने वाले जन दर्शकों के लिए धमकी भरे कार्यों के बारे में चेतावनी देना है। इसी तरह, मास मीडिया भी समाज में हो रहे दुराचार के बारे में संबंधित प्राधिकरण को सूचित करता है और समाज में बड़े पैमाने पर दर्शकों के बीच दुर्भावना को हतोत्साहित करता है। चेतावनी या खबरदार निगरानी तब होती है जब मीडिया। हमें तूफान से होने वाले खतरों के बारे में सूचित करें, ज्वालामुखियों का उन्मूलन, आर्थिक स्थिति में गिरावट, बढ़ती मुद्रास्फीति या सैन्य हमले। ये चेतावनी तात्कालिक खतरों या पुरानी धमकियों के बारे में हो सकती है। इसी तरह, बढ़ते वनों की कटाई, नशीली दवाओं के दुरुपयोग, लड़कियों की तस्करी, अपराधों आदि की खबरें भी प्रसारित की जाती हैं जो समाज की शांति और सुरक्षा को नुकसान पहुंचा सकती हैं। फिल्मों के बारे में समाचार स्थानीय सिनेमाघरों, शेयर बाजार की कीमतों, नए उत्पादों, फैशन विचारों, व्यंजनों, और इतने पर साधन निगरानी के उदाहरण हैं।

मीडिया और समाज में संबंध– मास मीडिया सिर्फ तथ्यों और आंकड़ों की आपूर्ति नहीं करता है, बल्कि घटनाओं और स्थितियों की व्याख्या और व्याख्या भी करता है। मीडिया वास्तविकता को स्पष्ट करने के लिए सूचनाओं के परस्पर संबंध और व्याख्या करने के लिए विभिन्न स्पष्टीकरण प्रस्तुत करता है। सामान्य रिपोर्टिंग के विपरीत, व्याख्या कार्य ज्ञान प्रदान करते हैं। समाचार विश्लेषण, कमेंट्री, संपादकीय और कॉलम व्याख्यात्मक सामग्री के कुछ उदाहरण हैं। समाज को एक साथ जोड़ना मीडिया का कार्य समाज के विभिन्न तत्वों को एक साथ जोड़ना है जो सीधे जुड़े हुए नहीं हैं। उदाहरण के लिए: बड़े विज्ञापन विक्रेताओं के उत्पादों के साथ खरीदारों की जरूरतों को जोड़ने का प्रयास करते हैं। इस तरह, मीडिया विभिन्न समूहों के बीच एक सेतु बन जाता है, जिनका सीधा संबंध हो भी सकता है और नहीं भी।

समाजीकरण– समाजीकरण संस्कृति का संचरण है। मीडिया समाज का प्रतिबिंब है। वे लोगों, विशेषकर बच्चों और नए–नए लोगों का सामाजिकरण करते हैं। समाजीकरण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा, लोगों को उन तरीकों से व्यवहार करने के लिए बनाया जाता है जो उनकी संस्कृति या समाज में स्वीकार्य हैं। इस प्रक्रिया के माध्यम से, हम सीखते हैं कि अधिक अर्थों में हमारे समाज या मानव समाज के सदस्य कैसे बनें। हालांकि समाजीकरण मीडिया की प्रक्रिया हमारे व्यवहार, आचरण, दृष्टिकोण और विश्वासों को आकार देने में मदद करती है। समाजीकरण की प्रक्रिया लोगों को करीब लाती है और उन्हें एक एकता में

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

बांध देती है।

मुख्यता मीडिया को तीन प्रकार से विभाजित किया जाता है। इनका विभाजन इस प्रकार है :

1) प्रिंट मीडिया– प्रिंट मीडिया लोगो तक सूचनाएं पहुंचाने का प्रमुख माध्यम है। अखबार, मैगजीन प्रिंट मीडिया के मुख्य प्रकार है। अखबार आज भी लोगो के लिए जानकारी का पहला साधन है। देश मे कुल 1 लाख से भी ज्यादा पब्लिकेशन हाउस है जिनमे कुल 24 करोड़ अखबार प्रिंट होते है जिन्हे पढ़ने वालों की संख्या कुल 40 करोड़ से भी ज्यादा है।

2) ब्रॉडकास्ट मीडिया– प्रिंट मीडिया की तुलना मे ब्रॉडकास्ट मीडिया ज्यादा प्रभावी और असरदार माध्यम है। टेलीविजन और रेडियो ब्रॉडकास्ट के प्रमुख प्रकार है। बढ़िया विजुअल्स, रोचक प्रस्तुति, शानदार सेट जनता का ध्यान आकर्षित करते है। सूचना के साथ जनता को मनोरंजन भी भरपूर मिलता है।

3) सोशल मीडिया– बदलते समय के साथ मीडिया का भी स्वरुप बदला है। स्मार्ट फोन और सोशल मीडिया घ्प ने मीडिया को भी इस माध्यम का इस्तेमाल करने के लिए बाध्य कर दिया है। सोशल मीडिया ने पारंपरिक मीडिया के सांचे को तोडा है और क्रांतिकारी बदलाव किये है। सोशल मीडिया पर स्वतंत्र रूप से कोई भी जानकारी उपलब्ध कर सकता है।

प्रिंट मीडिया का महत्व– अखबार , मैगजीन और साप्ताहिक विशेष पत्र प्रिंट मीडिया की श्रेणी मे आते है। प्रिंट मीडिया सूचना का एक प्रमुख साधन है। पारंपरिक साधन होने के साथ ही प्रिंट मीडिया सबसे सस्ता माध्यम भी है। भारत जैसे देश मे आज भी टेलीविजन और स्मार्ट फोन हर व्यक्ति के पास उपलब्ध नहीं है। अखबार आज भी ऐसे लोगो के लिए सूचना का पहला साधन बना हुआ है। मात्र 2 रुपए से लेकर 5 रुपए तक ऐसा व्यक्ति दुनिया भर की खबरे पढ़ सकता है।

अखबार या मैगजीन आपके पास कई दिनों या महीनों तक उपलब्ध रहती है। आप कभी भी पुरानी खबरों को आसानी से देख सकते है।

ब्रॉडकास्ट मीडिया के मुकाबले अखबार मे छपी खबरों पर लोगो को भरोसा अधिक होता है। कुछ भी कह कर चले जाना आसान है किंतु लिखी हुई बात कभी मिटायी नहीं जा सकती है।

मार्केटिंग दृष्टिकोण से भी प्रिंट मीडिया ज्यादा प्रभावशाली साबित होता है। खर्चा भी कम और पहुँच भी ज्यादा हो जाती है।

प्रिंटेड खबरें पाठक ज्यादा सटीकता से पढ़ते है।

लोकतंत्र मे मीडिया की भूमिका– मीडिया को लोकतंत्र का प्रहरी कहा जाता है। प्रहरी का अर्थ है जो निगरानी और चौकसी बनाये रखता है। मीडिया की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका यह है की वह सरकार के सभी कामों की समीक्षा करता है। जनता को उनके आस पास हो रही सभी गतिविधियों के बारे मे सूचित करता रहता है।

व्यवस्था के प्रति आलोचनात्मक रवैया रखता है। व्यवस्था और समाज की खामियों को उजागर करता है। इस प्रकार से मीडिया समाज और सरकार की मदद ही करता है। एक निष्पक्ष मीडिया एक मजबूत व्यवस्था का निर्माण करती है।

मीडिया जनता और सरकार के बीच एक पुल का काम करता है। सरकार और जनता के बीच संवाद का माध्यम बनता है । जनता के लिए सरकार की जवाबदेही तय करता है तो जनता के मत को स्विंग भी करता है। देश मे स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति का मापदंड मीडिया से निर्धारित होता है। अगर देश की मीडिया लिखने और बोलने मे स्वतंत्र है तो ऐसी व्यवस्था को सही मायने मे लोकतंत्र कहा जा सकता है। स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति की रक्षा करना भी मीडिया का काम है।

वहीँ अगर सोशल मीडिया की बात करे तो आज सोशल मीडिया अधिक प्रभावशाली बन गया है। किसी भी प्रकार की सूचना लोगो तक मिनटों मे पहुँच जाती है। गूगल, यूट्यूब और फेसबुक जैसे माध्यमों के जरिए स्वतंत्र पत्रकारिता को भी बढ़ावा मिल रहा है। ट्विटर और इंस्टग्राम के जरिये लोग स्वयं भी आज मीडिया की भूमिका अदा कर रहे है।सोशल मीडिया का भारतीय राजनीति पर एक सकारात्मक प्रभाव यह रहा की देश का युवा राजनीति से जुड़ सका। सोशल मीडिया से पहले भारतीय राजनीति केवल समाचार पत्र पढ़ने वाले या, फिर गल्ली मोहल्ले मे चर्चा करने वालों तक ही सिमित थी।

भारतीय राजनीति मे मीडिया की भूमिका– भारत एक लोकतांत्रिक देश है। इसलिए भारतीय राजनीति मे मीडिया की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। किंतु प्रश्न उठता है की क्या मीडिया अपनी इस भूमिका को निभाने मे कामयाब हो रही है ?

वर्तमान समय मे सोशल मीडिया एक मजबूत मीडिया माध्यम के रूप मे उभरा है। राजनीतिक दलों ने जनता से जुड़ने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया, जिसके कारण उनकी धन, समय और संसाधनों की बचत हुई। वे कम समय मे एक बहुत बड़े वर्ग से मे कामयाब हुए। सोशल मीडिया युवाओं को ज्यादा आकर्षित करता है। इसी कारण युवा वर्ग सोशल मीडिया पर अधिक समय व्यतीत करते है। राजनैतिक दल इस तथ्य को समझते है इसलिए उन्होंने सोशल मीडिया के माध्यम से युवाओं को प्रभावित करने का प्रयास

PIF-7.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-III, Issues-18, YEAR- Dec. -2020

किया।

साल 2019 के लोकसभा चुनाव मे देश के कुल मतदाताओं मे से 13 करोड़ युवा मतदाता थे। इसमें से भी 2 करोड़ युवा 18 वर्ष से 19 वर्ष की उम्र के नए मतदाता थे।

सोशल मीडिया के माध्यम से राजनैतिक दल जनता के मूड को भाँप सकते है। किन मुद्दों पर जनता ज्यादा आक्रामक है, उन्हें चिन्हित कर सकते है। इस तरह के प्रयोगों से राजनीतिक पार्टियां चुनाव के दिन स्विंग वोटरों को खींच पाने मे कामयाब रहते है। साल 2013 और 2015 दिल्ली विधानसभा चुनाव मे आम आदमी पार्टी ने सोशल मीडिया का बखूबी इस्तेमाल किया। वहीं साल 2014 और 2019 के लोकसभा चुनावों मे भारतीय जनता पार्टी मीडिया के कारण जनता के बीच अपनी साख जमा सकी।

निष्कर्ष– यह जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद करता है। जैसा कि हम पहले ही समझ चुके हैं कि संचार का उद्देश्य लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाना है। सही संचार के माध्यम से, सही समय पर सही लोगों के साथ संचारक आकांक्षाओं को विकसित करता है और लोगों को बेहतर जीवन प्राप्त करने में मदद करता है। उदाहरण के लिए लोगों के स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार के लिए धुआं रहित चूल्हे के बारे में बताना लोगों को सही दिशा में अपना दृष्टिकोण बदलने के लिए प्रेरित करता है यहां यह समझना होगा कि जब संचार का उपयोग परिवर्तन लाने के लिए किया जाता है तो यह प्रेरक और सकारात्मक प्रकृति का होना चाहिए। संचार से न केवल जागरूकता का प्रसार होना चाहिए बल्कि सकारात्मक दिशा में दृष्टिकोण में बदलाव आना चाहिए जैसे कि केवल लड़कियों की शिक्षा के महत्व को समझने से तब तक बदलाव नहीं आएगा जब तक कि लोग अपने बच्चों को स्कूल भेजना शुरू नहीं करते। लोगों को एक–दूसरे के करीब लाएं। जब सामाजिक परिवर्तन के लिए संचार की योजना बनाई जाती है, तो कार्यक्रम को लोगों के माध्यम से, लोगों द्वारा और लोगों के लिए डिजाइन और कार्यान्वित किया जाता है। इस प्रकार, लोग कार्यक्रम के मालिक होने लगते हैं और इससे लोग एक–दूसरे के साथ मिलकर काम भी करते हैं। जैसे दो देशों, दोस्तों, पड़ोसियों, रिश्तेदारों के बीच संचार योजनाकार और व्यवसायी के बीच की खाई को पाटता है।

किसी भी विकास कार्यक्रम में प्रेषक और रिसीवर के बीच समन्वय और समझ बहुत महत्वपूर्ण है। बेहतर संचार से बेहतर नियोजन होता है, जो अधिक आवश्यकता आधारित होता है, और लोगों द्वारा अच्छा कार्यान्वयन होता है, जिससे सकारात्मक प्रतिक्रिया होती है, जो संचार के साथ–साथ विकास के चक्र को भी पूरा करती है। उदाहरण के लिए कर्मचारियों और बॉस, छात्रों और शिक्षाकों, किसानों और विस्तार कार्यकर्ताओं के बीच संचार। विकास कार्यक्रम के उद्देश्यों को प्राप्त करने के साधन किसी भी संदेश को लोगों तक पहुँचाने के लिए संचार बहुत महत्वपूर्ण है, उदाहरण के लिए, यदि हम कन्या भ्रूण हत्या और लिंग निर्धारण परीक्षण को अपराध के रूप में शिक्षा देना चाहते हैं, तो हमें आसपास के लोगों के साथ बातचीत और चर्चा करने की आवश्यकता है, जो उनके साथ संवाद किए बिना संभव नहीं है। सामाजिक स्थिति में सुधार करता हैअच्छी तरह से सूचित और जानकार व्यक्तियों को समाज में हमेशा सम्मान दिया जाता है। संचार प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने, राय देने और निर्णय लेने की प्रक्रिया का हिस्सा बनने का अवसर देता है। संचार सांस्कृतिक और सामाजिक स्थिति बनाता है जैसे संचार लोगों को नए विचारों, संस्कृति और प्रथाओं के बारे में जानकारी देता है, जो लोगों को उनके जीवन और परिवार के बारे में सही चुनाव करने में मदद करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एन सी ई आर टी : भारतीय समाज का परिवर्तन एवम विकास।
2. डा. गोविंद प्रसाद : सामाजिक परिवर्तन।
3. हिंदुस्तान दैनिक।
4. जीन बौद्रिल्लार्ड : द परफेक्ट क्राइम।
5. एस. एल. दोषी : आधुनिक समाजशास्त्रीय विचारक।
6. प्रसाद एवम पांडे : सामाजिक संरचना।
7. बी.के.नागला : भारतीय समाजशास्त्रीय चिंतन।
8. डब्ल्यू.डब्ल्यू.डब्ल्यू. ब्रितानिका. कम।

*****